आज पूरे देश के सामनें एक सवाल है कि आतंकवाद कब थमेगा ? इस सवाल का जबाब मेरे हिन्दोस्तांन का सिपाही नहीं जानता,लेकिन मादरे वतन पर कुर्बानी देना जानता है । हमला देश की गौरवशाली संसद पर हों या आस्था के प्रतीक अक्षरधाम पर, कश्मीर की विधानसभा पर हो या मुम्बई के हृदयस्थल पर,खाकी वर्दी पहनें कोई न कोई हेमन्त करकरे, अशोक काम्टे, विजय सालस्कर, मोहनचंद शर्मा, वंदना मलिक या कमलेश कुमारी आ ही जाते हैं मुल्क पर सबसे पहले अपना शीश दान करनें। लोकतंत्र की रक्षा के लिये प्राणों की आहुति देनें वालों की भी कोई ''अंतिम इच्छा'' होती है। वीर शहीदों की इसी भावना को व्यक्त करनें की कोशिश एक रचना ''अंतिम इच्छा'' के माध्यम से मैनें की है ।

अन्तिम इच्छा

जब मैने आतंकवादियों की गोली से मारे गये,
वीर सिपाही के शरीर के पास से उसकी डायरी को उठाया,
तो उसके संस्मरणों में मैनें उसकी ''अन्तिम इच्छा'' को इस तरह लिखा हुआ पाया,
मेरी लम्बी सेवा में पुलिस थानें के अलावा ऐसा कोई सरकारी कार्यालय नज़र नहीं आया,
जहाँ मैने पूरे साल 24 घण्टे कभी ताला लटका नहीं पाया,
मेरी जिन्दगी में कभी छुट्टी का संडे या मंडे नहीं आया,
जब हर तरफ जगमगाई दीपों की लाली, तो मैने भी मनाली दिवाली,
जब रंग गुलाल उड़ाती निकली मस्तानों की टोली, तो मेरी भी मन गई होली,
टूट न जायें ताले कहीं, पड़े न खलल चैन में, मैने बैचेन आँखों में नींद डुबोली,
धूप, सर्दी और बारिश भी न कर पाये मेरे जोश को ठंडा, मैं तो करता रहा ड्यूटी लेके हाथ में डंडा,
सच कहूँ ख्याल तो मेरे भी मन में बहुत आये, घर जाकर बीबी से बतियाऊँ,
पिक्चर ले जाऊँ, मेला घुमाऊँ, बच्चों का पढाऊँ, थपकी दे सुलाऊँ,
पर कमबख्त ड्यूटी नें हमेशा आफत डाली, कभी मन मसोस डाला, कभी कल पे बात टाली,
ज़मानें नें भी देखा तो हिकारत से देखा, गलती पे खाई अफसर की डांटे,
जिसके दामन में हो सिर्फ नफरत और कांटे, तुम्ही बताओं वो फूल कहाँ से बांटे,
माना मेरी वर्दी में नजर आते हैं काले धब्बे, पर अब तो इल्जाम है नींव की ईट से शिखर तक,
हर कोई बेताब है नहानें को भ्रष्टाचार की गंगा, पैर से सर तक,
जब पुत रही हो हर चेहरे पर कालिख, तो मैं ही उजला नजर कैसे आऊँ,
जिस समाज में दुर्लभ हो गया है ईमान का साबुन, वहाँ मैं अपनी वर्दी कैसे चमकाऊँ,
हम बांगलादेश मुक्ति और कारगिल गाथा बड़े गर्व से गाते हैं, वीर शहीदों के किस्से हम सुनते और सुनाते हैं,
जितनें फौजी एक युद्ध में अपना शीश कटाते हैं, उतनें तो हर साल यहाँ ड्यूटी पर मारे जाते हैं,
आतंकी और लुटेरों से यह चमन नहीं लुट पायेगा, खाकी वर्दी वालो का बलिदान व्यर्थ न जायेगा,
लेकिन जब इतिहास लिखो तुम, कलम उठाओ पन्नों पर, कसम तुम्हें है सच्चाई की इतना बस दिखला देना,
जिक्र करो जब हरियाली और खुशहाली पंजाब की, पुलिस जनों की विधवाओं की सूनी मांग दिखा देना,
काश्मीर में लोकतंत्र का झंडा जब फहराता हो, कुछ अनाथ बच्चों की बस हँसती तस्वीर दिखा देना,
आसाम, मणीपुर और त्रिपुरा में अब विघटन का शोर नहीं, कुछ गुमनाम चिताओं पर तुम श्रद्धा सुमन चढ़ा देना,
गर दिखती हो शांति और व्यवस्था की उजली तस्वीर कहीं, डाकू की गोली से घायल लंगड़ी टांग बता देना,
सीमा पर लड़ता है फौजी अपनें दुश्मन से, हम लड़ते अपनों से अपने मन से,
होती है हमसे भी गलती, गलती करता है इंसान, हमको तो करनी है केवल कातिल, वहशी की पहचान,
कहते हैं कुछ लोग कि हम हैं वर्दीवाले गुण्डे,
अपनी भाषा गाली–डण्डे, बदजुबान है, बद दिमाग है, भ्रष्ट और निकम्मे हैं,
सच्चाई गर इसमें हो तो तोहमत हमें लगा देना, पर मेरी ''अंतिम इच्छा'' पर इतना सम्मान दिखा देना,
गर खाकी वर्दी के पीछे भी दिख जाये इंसान कोई, तो बस प्यार से मुस्कुरा देना ।

(पवन जैन)
पुलिस महानिरीक्षक
उज्जैन झोन,उज्जैन

Email:- pavan_jain123@yahoo.co.in